19-12-67 ओम् शान्तिः प्रातःक्लास

रुहानी बाप रुहानी बच्चों को रुहानी पाठशाला मे डायरेक्शनस देते है। वा ऐसे कहे कि बच्चों को ड्रिल सिखलाते है। जैसे टीचर डायरेक्शन देते है वा ड्रिल सिखवाते है नां। यह रुहानी बाप भी बच्चो को डायरेक्ट करते है, क्या कहते है? मनमनाभव। जैसे कि वो भी कहते है नां अटेनशन प्लीज़। बाप भी कहते है मनमनाभव। यह जैसे के हर एक अपने पर मेहर करते है। बाप कहते है कि बच्चो मामेकम् याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। यह रुहानी ड्रिल तो कहाँ का रुहानी बाप ही समझाते, सिखवाते है। वो तो है सुप्रिम टीचर तुम हो नायब टीचर। तुम भी तो सबको कहते ही हो नां कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। देहीअभिमानी भव। मनमनाभव का अर्थ भी यही है। डायरेक्शनस देते है बच्चो के कल्याण के लिये। खुद किसीसे सीखा नही है। और तो सभी टीचर खुद सीख कर फिर सिखवाते है। यह तो कही भी स्कूल आद मे पढ़ नही सकते है। यह तो सिर्फ सिखवाते ही है। कहते है कि मै तुम रुहों को रुहानी ड्रिल सिखवाता हूं। वो सब तो जिस्मानी बच्चो को जिस्मानी ड्रिल हो सिखवाते है। उनको तो ड्रिल आद सब शरीर से ही करनी होती है। इसमे तो शरीर की बात ही नही है। बाप कहते है कि मेरा कोई भी शरीर नही है। मै तो ड्रिल सिखलाता हूं। डायरेक्शनस देता हूं। उसमे ही ड्रिल सिखवाने का ड्रामा प्लान अनुसार ही पार्ट भरा हुआ है। आते ही है बाबा ड्रिल सिखवाने के लिये। तुमको तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह है बहुत ही सहज। 84 का चक्र बुद्धि मे है कि 84 का चक्र लगा कर नीचे उतरे है। अब बाप कहते है कि तुमको वापस जाना है। ऐसा और कोई भी अपने फालोवर्स को वा स्टुडण्टस को नही कहेंगे कि हे रुहानी बच्चो अब तुमको वापस घर जाना है। यह तो सिवाय रुहानी बाप के कोई भी समझा नही सकते है। बच्चे समझ समझते है कि अभी हमको वापस जाना है जरुर। यह दुनियां ही अब तमोप्रधान है। हम तो सतोप्रधान दुनियां का मालिक थे। फिर 84 का चक्र लगा कर तमोप्रधान बुद्धि दुनियां का मालिक बने है। यहां पर तो दुःख ही दुःख है। बाप को तो कहते भी है कि दुःख हर्ता सुख कर्ता। तुम जानते हो कि अभी हमारे सब दुःख दूर हो रहे है। दुःख हर्ता सुख कर्ता अर्थात तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने वाला एक ही बाप है। तुम बच्चे समझते हो कि हमने तो बहुत ही दुःख लिया है। ऐ: आः सामने खडा हैं। वो तो है ही फूलो का बगीचा। अभी तो हम कांटे से फूल बन रहे है। भक्ति मे तो हम कांटे ही बने है। तुम तो ऐसे नही कहेंगे नां कि हम कैसे निश्चय करें। अगर संशय है तो विनशयन्ति। स्कूल मे से पैर बाहर के लिये उठाया तो पढाई बन्द हो जावेगी। पद भी विनशयन्ति हो जावेगा। बहुत घाटा पड जावेगा। प्रजा मे भी कम पद हो जावेगा। मूल बात ही है सतोप्रधान पुज्य देवता बनना। अभी तो तुम देवता नही हो नां। तुम ब्राहमण हो तो ही यह सारी समझ आई है। ब्राहम्ण ही तो आकर बाप से यह ड्रिल सिखवाते है। अन्दर मे तो खुशी भी होती है। यह पढाई तो अच्छी ही लगती है नां। भेला गीतावांच्य है नां। भल उन्होने तो कृष्ण का नाम डाल दिया है परन्तु उसने तो ड्रिल सिखवाई ही नही है। बाप सिखवाते है। कृष्ण की ही वो आत्मा जो कि भिन्न नाम रुप धारन करके अब पतित बनी है उनको ही ड्रिल सिखवाते है। खुद नही सीखते है। और सभी तो कोई न कोई से सीखते तो जरुर है। यह तो है ही सिखवाने वाला रुहानी बाप। तुमको वो सिखवाते है तुम फिर औरो को सिखवाते हो। तुम 84 जन्म लेकर पतित बने हो। अभी तो फिर से पावन बनना है। इसके लिये ही रुहानी बाप को याद करो। भक्ति मार्ग मे तुम गाते ही आये हो हे पतित पावन . . . । अभी भी तुम कहीं पर भी जाकर देखो। तो भी तो राजऋषी हो नां। कही पर भी घूम फिर सकते हो। तुमको कोई भी बन्धन नही पडा हुआ है। तुम बच्चों का तो यह टीचर है। बेहद का बाप भी बन्धन मे आये है। बाप भला भला बच्चो से पढाई का उंजूरा कैसे लेवें? टीचर का ही बच्चा होगा तो मुफ्त मे ही पढ़ेगा नां। यहां पर भी तुम सभी मुफ्त मे ही पढ़ते हो। ऐसे मत समझो कि हम देते है वो हो। हमारी तो फर्ज है। तुम देते कुछ भी नही हो। वह तो तुम रिटन मे लेते हो। मनुष्य दान पुण्य करते रहते है तो समझते है कि हमको

दुसरे जन्म मे रिटन मे मिलगा। तो लेने लिय ही तो दान पुण्य करते है नां। उसेस तो अल्प काल क्षण भंगुर सुख मिलता है। फल मिलता तो है दुसरे जन्म मे परन्तु वो तो नीचे उतरने वाले जन्म मे मिलता है। सीढ़ी तो उतरते ही आते हो नां। अभी तो जो कुछ भी तुम करते हो वो तो है चढ़ती कला मे जाने लिये। कर्मो का फल कहते है नां। आत्मा को कर्म का फल मिलता हैं। इन ल-न को भी तो कर्मो का फल ही तो मिला हे नां। बेहद के बाप से बेहद का फल मिलता है। वो तो मिलता है इनडायरैक्ट। ड्रामा में नूंध है। यह भी बना बनाया ड्रामा है। तुम जानते हो कि हम हू बहू यूं ह कल्प बाद ही फिर से आकर इस बेहद केबाप से वर्सा लेंगें। बाप हमारे लिये बैठ स्कूलस बनाते है। उस गवर्मेन्ट के तो है जिस्मानी स्कूल। तो जो कि भिन्न-2 प्रकार से आधा कल्प मे पढ़ते ही आये। अब बाप तो सभी दुःख 2। जन्मो के लिये दूर करने लिये पढ़ाते है। वहां तो है पढ़ाई। मगर उनमे भी नम्बरवार तो होते ही है। जैसे यहां पर भी राजा रानी वजीर प्रजा आद सब कुछ है। यह तो है पुरानी दुनियां। नई दुनियां मे तो बहुत थोडे होगें! वहां पर तो सुख बहुत होगा। वहां तुम विश्व का मालिक बन राज्य करते हो। राजायें महाराजायें होकर गये है। वो कितनी खुशियों को मनाते है। परन्तु बाप कहते है कि उनको तो फिर भी नीचे तो गिरना ही है। गिरते तो सभी है नां। देवताओं की भी धीरे-2 कला उतरती रहती है। परन्तु वहां पर तो रावण राज्य नही है इसलियेही वहां पर तो सुख ही सुख है। यहां पर तो है रावण राज्य। तुम जैस ही चढ़ते हो तो वैस ही फिर गिरते भी हो। आत्मायें भिन्न-2 नाम रूप धारन करती-2 नीचे उतरती आती है। ड्रामा के प्लान अनुसार कल्प पहले मुआफिक गिर कर तमोप्रधान बन गये है। काम चिता पर चढ़ने से ही दुःख शुरू होता है। अब है अति दुःख। फिर वहां पर तो अति ही सुख होगा। उनका तो है ही हठ योग तुम तो राज रिषी हो। तुम कोई से भी पूछते हो कि रचता और रचना की आद मध्य अन्त को जानते हो तो कहेंगे नही। पूछेंगे भी तो वो ही जो कि जानते होंगें। खुद ही नही जानते होंगे तो पूछ भी कैसे सकते है? तुम जानते हो कि रिषी मुनी आद कोई भी त्रिकाल दृशी नही थे। बाप हमको त्रिकाल दृशी बना देते है। यह बाबा जो कि कभी विश्व का मालिक था उनको भी तो यह ज्ञान नही था नां। इस जन्म मे भी 60वर्षो तक ज्ञान नही था। जब बाप आये है तो भी आहस्ते-2 यह सबसुनाते रहते है। भल निश्चय बुद्धि हो जाते है फिर भी माया ~~बहु~~ बहुतों गिराती रहती हैं। नाम नहीं सुना सकते हैं। नही तो ~~नाम~~ ना ~~दे~~ उमेद हो जावेंगे। समाचार तो आते है ना। संग बुरा लगा, नई शादी की हुई से संग लगा, चलायमान हो गया। कहते है हम शादी करने बिगर रह नहीं सकता। अच्छा महारथी रोज आने वाला, यहा से भी कई बार हो ~~आ~~ कर गया है। इसको माया रूपी ग्राह ने आकर पकड़ा है। ऐसे बहुत केस होते रहते हैं। ताजा समाचार बताया जाता है। अभी शादी की नहीं हैं, माया मुंह में हप कर रही हैं। स्त्री रूपी माया खेंचती रहती है। गज के मुंह में आकर पड़ा हैं। फिर आस्ते2 आकर हप कर लेंगे। कोई गफ्लत करते हैं या देखने से चलायमान होते हैं, समझते हे हम बहुत ऊंचे से एकदम खड्डे में गिर पड़ेंगा। कहेंगे बच्चा बहुत अच्छा था। अब बिचारा गया। अरे2 सगाई हुई, यह मरा। बाप तो सदैव बच्चों को लिखते हैं जीते रहो। कहां ~~क~~ माया का वार जोर से न लगा जाये। शास्त्रों में भी ऐसी कुछ बातें हे ना। अभी की ही बातें बाद में गाई जावेंगी। तुम तो पुरूषार्थ कराते हो। ऐसा न हो कहा माया रूपी ग्राह ~~प~~ हप कर ले। किसम2 से माया पकड़ती हे। मूल है काम महाशत्रु। इनसे बड़ी सम्भाल करनी है। पतित दुनिया से पावन दुनियां कैसे बन रही हैं तुम देखते रहो। मुंझने की बात ही नहीं। सिर्फ अपनको आत्मा समझ बाप को याद करने से ~~प्रश्न~~ सब दुःख दूर हो जाते हैं। बाप ही पतित-पावन हैं। यह है योगबल। भारत का प्राचीन राजयोग बहुत मशहूर है। समझते हे क्राईस्ट से 3000 वर्ष पहले ~~र~~ प्राडाईज था। तो जरूर कोई और धर्म नहीं होंगा। कितनी सहज बात हैं। परन्तु समझते नहीं हैं सिर्फ कहने मात्र कह देते हैं। अभी तुम समझते हो ~~अ~~ वह राज्य फिर से स्थापन करने लिए बाप आया हुआ है। 5000 वर्ष पहले भी शिव बाबा आया था। जरूर यहीं ज्ञान दिया होंगा

जैसे अब दे रहे हैं। बाप खुद भी कहते हैं मैं कल्प2 के संगम युग पर साधारणतन में आकर राजयोग सिखलाता हूं। तुम राजऋषि हो। पहले नहीं थे। बाबा आया है तब से बाबा पास रहे हो। पढ़ते भी हो। सर्विस भी करते हो। स्थूल सर्विस या सूक्ष्म सर्विस। भक्ति में भी भक्ति भी करते हैं फिर घरबार भी सम्भालते हैं। अब बाप कहते हैं भक्ति पूरी हुई। ज्ञान शुरु होता है। मैं आया हूं ज्ञान से सदगति देने। भक्ति से तो दुर्गति ही होती आई है। आपोजीशन तो बहुत होगा ना। जिनको ज्ञान का पता ही नहीं है तो तो जरूर वह पथ्केगे। विघ्न भी अनेक प्रकार के डालते हैं। तब तो द्रोपदी का भी मिशाल है। तुम सब द्रोपदियां हो। शास्त्रों में तो उल्टा लिख दिया है कि 5 पति थे। इन शास्त्रों से और ही नीचे गिर पड़े हैं। झूठी गीता सुनते2 नीचे उतरते ही आये हैं। यह बाप समझाते हैं जो फिर बाद में लिखा जाता है। बुलाते भी बाप को है कि हे बाबा आकर पतित- से पावन बनाओ। सतयुग पावन दुनिया थीना। परन्तु जब कोइ रास्ता बतावे तब बुधि में बैठे ना। तुम्हारी बुधि में है बाबा हमको पावन बना रहे हैं। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार तुमको रास्ता बताने आया हूं। टीचर पढ़ाते हैं एमआबजेक्ट सामने खड़ा हैं। यह है ऊंच ते ऊंच पढ़ाई। एकदम अपने घर जाने का है। घर को हो भूल गये हो ना। हम घर कहते हैं वह मुक्ति धाम कहते हैं। तुम्हारा घर है बेहद का। मुक्ति का रास्ता बाप कितना सहज बताते हैं। जैसे कल्प पहले समझाया था वही समझाते रहते हैं। ड्रामा टिक2 चलती रहती है। सेकन्ड व सेकन्ड जो बीता सो फिर 5000 वर्ष बाद रिपीट होगा। दिन बितती जाती है। यह ख्यालात और कोई की बुधि में नहीं है। सतयुग त्रेता बीत गया, जो बीत गया वह फिर रिपीट होगा। बीती भी वही जो कल्प पहले बीती था। बाकी थोड़े दिन हैं। वह लाखों वर्ष कह देते हैं। उनके भेंट में तुम कहेंगे बाकी कुछ घन्टे हैं। यह भी ड्रामा में नुंधा है। जब आग लग जावेगी तब जागेंगे फिर तो टुलेट हो जाते हैं। तो बाप पुरुषार्थ तो कराते रहते हैं। तैयार हो बैठो। टीचर को ऐसा न कहना पड़े कि टुलेट। नापास होने वाले बहुत पछताते हैं। समझते हैं हमारा वर्ष मुफ्त में चला गया। कोई तो कहते न पढ़ा तो क्या हुआ। तुम बच्चों को स्ट्रीक हो रहना चाहिए। हम तो बाप से पूरा वर्सा लेंगे। अपने आत्मा समझ बाप को याद करना है। इसमें कोई तकलीफ होती है तो बाप से पूछ सकते हो। यही मुख्य बात है। बाप ने आजे से 5000 वर्ष पहले भी कहा था मामेकंयाद करो। पतित-पावन मैं हूं। सब का बाप मैं हूं। कृष्ण तो सभी का बाप नहीं है। तुम शिव की, कृष्ण की पुजारियों को यह ज्ञान दे सकते हो। आत्मा पूज्य न बनी होगी तो कितना भी माथा मारो समझेंगे नहीं। अभी नास्तक बनते हैं शायद आगे चल आस्तिक बन जावे। समझो शादी कर गिरता है फिर आकर ज्ञान उठावे। परन्तु वर्सा बहुत कम हो जावेगा। क्योंकि बुधि में दूसरे की याद आकर बैठी। वह निकलने बड़ा मुश्किल होता है। पहले स्त्री की याद फिर बच्चे की याद आवेगी। बच्चे भी स्त्री जास्ती क्योंकि बहुत समय की याद है ना। बच्चा तो पीछे होता है। फिर मित्र सम्बन्धी, ससुर घर की याद आती है। पहले स्त्री। जिसने बहुत समय साथ दिया है। यह भी ऐसे हैं। तुम कहेंगे हम देवताओं के साथ बहुत समय थे। ऐसे तो कहेंगे शिव बाबा के साथ के बहुत समय से प्यार है। जिसने 5000 वर्ष पहले भी हमको पावन बनाया था। कल्प2 आकर हमारी रक्षा करते हैं। तब तो उनको दुःखहर्ता, सुखकर्ता कहते हैं। तुमको बड़ा लाइन क्लेयर बनाना है। बाप कहते हैं इन आंखों से जो कुछ तुम देखते हो यह तो कब्र दाखिल हो जाना है। अभी तुम हो संगम युग पर। अमरलोक आने वाला है। अभी हम पुरुषोत्तम बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह है कल्याण कारी पुरुषोत्तम संगम युग। दुनिया में देखते रहते हो क्या 2 हो रहा है। अब बाप आया हुआ है तो पुरानी दुनिया भी खतम होने का है। आगे चल बहुतों को ख्याल में आवेगा कोई आया हुआ है जो दुनिया को चेंज कर रहे हैं। यह वही महाभारत लड़ाई है। तुम अभी कितना समझदार बने हो। यह बड़ी मथन करने की बातें हैं। अपना स्वास विथा नहीं गवाना है। मनुष्य समझते हैं यज्ञ तप आद करने से आमदनी भी है स्वास भी सफल होता है। परन्तु भक्ति मार्ग में सफल होती ही नहीं। स्वास सफल होती है ज्ञान से। अच्छा, मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का याद प्यार गुडमार्निंग।